‘नाथ’ शब्द का परिशीलन, एक दृष्टि

डॉ. सोनल सिंह

“नाथ कहता सब जग नाथ्या”

नाथ शब्द नाथृ[1] धातु से बना हुआ है, जिसका सामान्य अर्थ एश्वर्य तथा आशीर्वाद होता है। हिन्दी भाषा में इस शब्द का अर्थ स्वामी, मालिक, पति, राजा आदि है। सनातन धर्म में जब देवी देवताओं की स्तुति करते हैं तो हे नाथ ! कहकर संबोधित करते हैं। उसी प्रकार नाथ परम्परा में तेजयुक्त त्रिकालिक विभूतियों को नाथ नाम से जाना जाता हैं। जैसे- आदिनाथ, पशुपतिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, गणनाथ, नागनाथ, वैद्यनाथ, विश्वनाथ, जगन्नाथ, रामनाथ, द्वारिकानाथ, केदारनाथ, बदरीनाथ, अमरनाथ, एकलिंगनाथ, जालंधरनाथ, इत्यादि असंख्य नाम प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत पत्र में नाथ शब्द का विवेचन नाथ परम्परा के अनुसार करने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्द- नाथ, मोक्ष, परमतत्व, पिंड, पंथ

राजगुह्य के अनुसार 'ना' का अर्थ है 'अनादिरूप' और 'थ' का अर्थ है (भुवनत्रय का) स्थापित होना, नाथ वह तत्व है जो अनादिरूप है तथा भुवनत्रय की स्थिति का कारण है।'[2] शक्तिसंगमतंत्र के अनुसार 'ना' का तात्पर्य उस नाथ ब्रह्म से है जो मोक्षदान में दक्ष है, उसका ज्ञान कराता है। 'थ' का अर्थ है, अज्ञान के सामर्थ्य को स्थगित करने वाला।[3] इस प्रकार नाथ वह तत्व है। जो मोक्ष प्रदान करता है, नाथब्रह्म का अनुबोधन करता है। तथा अज्ञान का स्थगन करता है। इन दोनों ग्रन्थों के अनुसार नाथ तत्व परमतत्व है। वह भुवनत्रय का कारण, परम ज्ञान का दाता तथा मोक्षदाता है। वह मोक्षदाता है, इस बात की पुष्टि गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह से भी हो जाती है। उसके अनुसार सृष्टि-स्थिति-लय की प्रक्रिया में शक्ति विश्व का सृजन करती

---

[1] बालमनोरमा आशिषि नाथः । शेषे, कर्मणि इति चानुवर्तते । तदाह — आशीरर्थस्येति । इदमपि समासाऽभावार्थमेव । सर्पिषो नाथनमिति । इदं मे भूयादितीच्छा आशासनम् । तदेवाशीर्नाथतेरर्थः । वस्तुतःकर्मीभूतसर्पिः सम्बन्धि आशासनमित्यर्थः ।

[2] नाकारोऽनादि रूपं थकारः स्थाप्यते सदा।

भुवनत्रयमेवैकः श्री गोरक्ष नमोऽस्तुते।। नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन 2022 पृ. 15 मूल गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह पृ 11

[3] श्री मोक्षदानदक्षत्वात् नाथब्रह्मानुबोधनात्।

स्थगिताज्ञान विभवात् श्री नाथ इति गीयते।। नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन 2022 पृ. 15 मूल शक्ति संगम तन्त्र वही पृ 11

है, शिव उसका परिपालन करते हैं, काल उसका संहार करते हैं तथा नाथ मुक्ति देते हैं।[4] 'नाथ' मत या 'नाथ' संप्रदाय के ग्रन्थों में 'नाथ' शब्द के शाब्दिक और दार्शनिक अर्थ मिलते हैं। डॉ. गोपीनाथ कविराज द्वारा संपादित गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह वास्तव में प्रमाण-संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें राजगुह्य और शक्तिसंगमतंत्र के प्रमाणों को उधृत किया गया है।

'नाथ' शब्द की शाब्दिक और दार्शनिक व्याख्या करते समय कोई अंतर प्राप्त नहीं होता। दोनों में 'नाथ' शब्द 'परमतत्व' की ओर संकेत करता है। निर्गुणी संतों के साहित्य में भी इस शब्द का व्यवहार मिलता है। रामानंद के नाम से प्रसिद्ध 'रामरक्षा'रचना में 'नाथ' को निरंजन और प्राण पिंड की रक्षा करनेवाला कहा गया है।[5] कबीर ने 'नाथ' शब्द का प्रयोग 'मायाजेता' के अर्थ में किया है। उसे त्रिभुवन का यती कहा गया है।[6]

नाथ सोई जो त्रिभुवन जती।

कबीर के इस अर्थ की पुष्टि गोरक्षसिद्धांतसंग्रह के वाक्यों से हो जाती है। किन्तु कबीर इस अर्थ में यह शंका की जा सकती है कि वहाँ नाथ शब्द का प्रयोग नाथ संप्रदाय के सिद्धों के लिए है, या किसी और कारण से जोड़ा गया था। क्योकिं 'नाथ' शब्द एक उपाधि भी है जो साधकों को नाथ संप्रदाय में दीक्षित होने के बाद प्रदान की जाती है और यह शब्द दीक्षा के बाद उनके नाम के अंत में जोड़ दिया जाता है। बंगाल के योगी लोग भी अपने नाम के साथ 'नाथ' शब्द जोड़ते हैं खासतौर से जो कपड़ा बीनने का कार्य करते हैं, पान बेचने तथा चूने का व्यवसाय करते हैं।[7] किन्तु कबीर ने अपनी रचनाओं में केवल एक बार ही इस शब्द का प्रयोग किया है[8] और नाथ शब्द के पूर्व विष्णु, कृष्ण, राम, अल्ला, खुदा, करीम, गोरख, महादेव, सिद्ध आदि का प्रयोग किया है। स्पष्टतः ये शब्द विभिन्न संप्रदायों के मान्य परमतत्व या पूज्य या उपास्य हैं। ऐसी स्थिति में यहाँ 'नाथ' को नाथपंथ का मान्य परमतत्व स्वीकार किया जाना चाहिए।

'नाथ' शब्द के विवेचन से यह परिलक्षित होता है कि 'नाथ संप्रदाय' उन साधकों का संप्रदाय है जो 'नाथ' को परमतत्व स्वीकार कर उनकी प्राप्ति के लिए योगसाधन करते थे तथा दीक्षा के बाद अपने नाम में 'नाथ' उपाधि जोड़ते थे। किन्तु डॉ० कल्याणी मल्लिक[9] का कथन

---

[4] शक्त्या तु सृज्यते विश्वं शिवेन परिपाळयते।
कालेन च संह्रियते मुक्तिर्नाथेन दीयते।। गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह पृ 49, 51

[5] रामानंद की हिन्दी रचनाएं, डॉ. बड़थ्वाल, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी 2012, पृ 3

[6] कबीर ग्रन्थावली, डॉ. श्यामसुन्दरदास, नागरी प्रचारिणी सभा 2008, पृ 199

[7] गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज, ब्रिग्स,मोतीलाल बनारसीदास, 1938 पृ 13

[8] डॉ० श्यामसुंदरदास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' में संकलित रचनाओं में

[9] गोरखनाथ नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में,डॉ. नागेनद्रनाथ उपाध्याय, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2020 पृ 4, मूल नाथ संप्रदायेतर इतिहास, दर्शन ओ साधनाप्रणाली, डॉ. कल्याणी मल्लिक, 1

है कि यह 'नाथपंथ' या 'नाथ संप्रदाय' नाम पुराना नहीं है। यह नाम अति आधुनिक है। महामहोपाध्याय डॉ. हरप्रसाद शास्त्री[10] ने सबसे पहले यह नामकरण किया था। इस समय नाथ संप्रदाय के और भी कई नाम प्रचलित हैं। ये नामकरण कभी तो संप्रदायगत वैशिष्ट्य को ध्यान में रखकर किए गए अथवा कभी उनकी साधना सम्बन्धी विशिष्टता के आधार पर किए गए हैं। हठयोग की साधना के कारण उन्हें 'योगी' कहा जाता है। इस 'योगी' शब्द का अर्थ बहुत विस्तृत है। इसका प्रयोग बहुत से ऐसे साधकों के लिए भी किया जाता है जो कनफटे नहीं हैं। संन्यासियों के लिए भी सामान्यतः इस शब्द का व्यवहार होता है। इसी प्रकार 'कनफटा', 'दर्शनी' और 'गोरखनाथी' नाम से इन साधकों का परिचय दिया जाता है। कान की लौ चिरवाने के कारण ही इन्हें कनफटा कहा जाता है।[11] दीक्षा के समय यह कान फाड़ने की क्रिया की जाती है। ये कनफटे भिक्षुक और संन्यासी रूपों में मध्यप्रदेश गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, गंगा के आसपास के प्रदेशों और नेपाल में मिलते हैं।[12] बंगाल के रंगपुर के योगी लोग शैव हैं। वे गोरक्ष को अपना आदिगुरु मानते हैं तथा अपने को कनफटा संप्रदाय के अंतर्गत बतलाते हैं। प्रायः कनफटा लोग गोरक्षनाथ को संप्रदाय का पुनर्गठनकर्ता मानते हैं । 'दर्शनी' शब्द का मूल 'दर्शन' है। इसी 'दर्शन' को कुंडल भी कहते हैं। कान फड़वाकर स्फटिक या अन्य किसी धातु या दाँत का कुंडल धारण करने के कारण ही इन्हें 'दर्शनी' कहते हैं। 'कनफटा' और 'दर्शनी' एक ही प्रकार के संस्कार की ओर संकेत करते हैं। किन्तु 'दर्शन' की आध्यात्मिक व्याख्याएँ नाथपंथी ग्रंथों में मिलती हैं। इस दर्शन को योगी लोग दीक्षा के समय धारण करते हैं। इसके धारण करने का अर्थ यह है कि साधक ने परमात्मा का दर्शन कर लिया है। इसे नाथपंथी लोग अत्यधिक पवित्र मानते हैं, इसीलिए इसे 'पवित्री' भी कहते हैं। कर्णभेद से जिस नाड़ी का भेदन होता है, कहा जाता है, उससे योगज सिद्धियाँ मिलती हैं। विभिन्न प्रदेशों में नाथपंथी लोग विभिन्न नामों से भी पुकारे जाते हैं। ब्रिग्स का कथन है कि ये लोग पंजाब हिमालय प्रदेश और बम्बई आदि प्रदेशों में प्रायः 'नाथ' नाम से, पश्चिमी भारत में प्रायः 'धर्मनाथी' नाम से तथा भारत के अन्य भागों में प्रायः 'गोरखनाथी' और 'कनफटा' नाम से संबोधित किए जाते हैं। यह निस्संदिग्ध है कि 'गोरखनाथी' नामकरण संप्रदाय के प्रवर्तक या संगठनकर्त्ता के कारण ही हुआ है। पंजाब प्रान्त में मुसलमान वर्ग में भी योगी मिलते हैं। उन्हें 'रावल' नाम से पुकारा जाता है।[13]

नाथपंथी साहित्य सामान्यतः नाथ संप्रदाय, सिद्ध मार्ग, योग मार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत मार्ग अवधूत संप्रदाय आदि नामों का प्रयोग मिलता है। सिद्धांतों के प्रतिपादन की दृष्टि

---

[10] वहीं

[11] नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन 2022 पृ. 26

[12] गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज, ब्रिग्स,मोतीलाल बनारसीदास, 2016 पृ 1-2

[13] नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन 2022 पृ. 21

से गोरक्षसिद्धांतसंग्रह नाथसिद्धों का प्रामाणिक ग्रंथ है। म० पं० गोपीनाथ कविराज तथा डॉ० कल्याणी मल्लिक के अनुसार इसमें प्रतिपादित सिद्धांत गोरक्ष तथा अन्य सिद्धों के अनुसार है।[14] नाथ संप्रदाय के लिए 'सिद्धमत' शब्द का प्रयोग 'गोरक्षसिद्धांतसंग्रह में ही मिलता है। वहाँ अन्य मतों तथा प्रपंचरहित संप्रदायों को छोड़कर सिद्धमत का आश्रय करने के लिए कहा गया है। संग्रहकार ने इसी प्रकार प्रतिपाद्य सिद्धान्त और संप्रदाय को बताने के लिए क्रमशः योगमार्ग, योगसंप्रदाय, अवधूतमत, अवधूतसंप्रदाय इत्यादि नाम का भी प्रयोग किया है। इससे यह प्रतीत होता है कि संग्रहकार की दृष्टि में ये सभी नाम एक ही संप्रदाय के लिए व्यवहृत हुए हैं।

उपर्युक्त नामों पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि ये नामकरण कई दृष्टियों से किए गए हैं। नाथपंथ या नाथसंप्रदाय, अवधूतमत, योगमत, योगसंप्रदाय इत्यादि नामकरण सिद्धान्त, दर्शन और साधना आदि को ध्यान में रखकर किए गए हैं। कनफटा दर्शनी, योगी मत, योगी संप्रदाय, गोरखनाथी आदि नाम दीक्षा, संप्रदाय, योगी जाति तथा संप्रदाय के प्रवर्तक की ओर संकेत करते हैं। साहित्य में वर्णित और प्रयुक्त नाम ही इस मत के प्राचीन नाम हैं। अतिरिक्त नाम सामाजिक, धार्मिक, सांप्रदायिक जीवन के अध्येताओं और खोजियों ने ढूँढ़ निकाले हैं। इनमें योगी, सिद्ध और नाथ शब्द ऐसे हैं जो अन्य जीवित वा मृत संप्रदायों वा मतों के लिए भी प्रयुक्त होते रहे हैं। गोरखनाथ द्वारा संगठित और प्रचारित संप्रदाय के लिए हिन्दी में नाथमत वा सम्प्रदाय शब्द ही अधिक प्रचलित है।

इस प्रकार प्रथमतः नाथ शब्द पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 'नाथ' शब्द नाथों के परमतत्व का बोधक शब्द हैं। यद्यपि परमतत्व या ब्रह्म अथवा गुरु के लिए भी इस शब्द के प्रयोग मिलते हैं। यह 'नाथ' सृष्टिक्रम से सर्वथा अतीत है। कहा जा सकता है, इस नाम को अपने परमतत्व और परमोपास्य के रूप में स्वीकार करने के कारण ही शैवों का एक विशेष संप्रदाय नाथ संप्रदाय के रूप में हुआ। किन्तु प्राचीनता की दृष्टि से यह नाम स्वीकृत नहीं है। नाथपंथी साहित्य में सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योगसंप्रदाय, अवधूतमत, अवधूत सम्प्रदाय आदि जो नाम मिलते हैं 'वे इतने व्यापक हैं कि उनके अन्तर्गत साधकों के अन्य समूहों का अन्तर्भाव हो सकता है। गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह नामक ग्रंथ के आधार पर 'सिद्धमत' नाम संप्रदाय के लिए स्वीकार किया जा सकता है किन्तु प्रायः उपास्य, उपासक, प्रवर्तक और साधनापद्धति के ही संप्रदायों के नाम देखने को मिलते हैं। दूसरे, ये नाम ऐसे भी हों जो अन्य संप्रदाय से भ्रम न उत्पन्न करें। सिद्धमत नाम स्वीकार करने पर दूसरे साधकसमूहों का इसमें अन्तर्भाव होता ही है, साथ ही नाथ नामक उपास्य की ओर भी, जिसकी घोषणा गोरक्षसिद्धांतसंग्रह ने बड़ी

---

[14] सिद्धसिद्धान्तपद्धति एण्ड अदर वर्क्स ऑव नाथ योगीज, डॉ. मल्लिक, इंट्रो पृ 35 पूना ओरिएटस बुक हाउस पूना 1954

दृढ़ता से की है, कोई संकेत नहीं होता। इसलिए गोरक्षसंप्रदाय अथवा नाथमत अथवा नाथसंप्रदाय नाम ही आधुनिक दृष्टि से अधिक उचित प्रतीत होता है।

सहायक निदेशिका
महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
ईमेल-drsonal.singh088@gmail.com
मो.8299829806

सहायक ग्रन्थ

1-कबीर ग्रन्थावली, डॉ. श्यामसुन्दरदास, नागरी प्रचारिणी सभा 2008
2-गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज, ब्रिग्स,मोतीलाल बनारसीदास, 1938
3-गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज, ब्रिग्स,मोतीलाल बनारसीदास, 2016
4-नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन 2022
5-सिद्धसिद्धान्तपद्धति एण्ड अदर वर्क्स ऑव नाथ योगीज, डॉ. मल्लिक